# अणु शक्ति

Abdurahiman Kutty E. V. P. — I M. Sc. (Maths.)

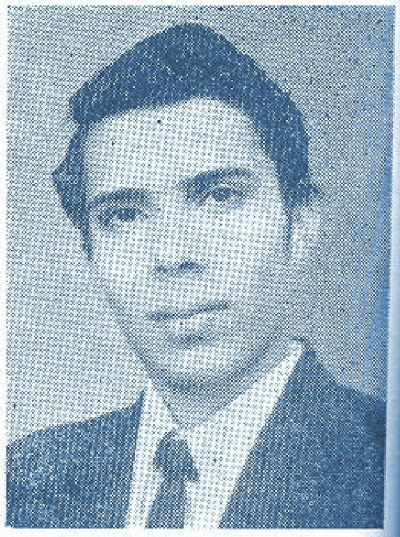

यह परमाणु युग है। इस शताब्दी ने विद्युत् से भी अधिक तीव्र और अनन्त अणु शक्ति के आविष्कार से विश्व को आश्चर्यचकित किया।

अणुवाद का आरंभ डा. डाल्टन की 'अटामिक थ्यूरी' से हुआ है। उन्होंने कहा कि सभी पदार्थ परमाणु से बने हैं और यह परमाणु टूटता नहीं। किन्तु बाद को वैज्ञानिक इस निर्णय पर पहुँचे कि परमाणु टूट सकता है और परमाणु में भी एक संसार छिपा हुआ है। परमाणुओं के मध्य में एक केन्द्र होता है जिसकी चारों ओर एलेक्ट्रोन घूमते हैं। इस अणु को अगर खण्डित कर दिया जाए तो एक भयंकर विस्फोट होगा जिससे अनन्त शक्ति उत्पन्न होगी।

इस अद्भुत शक्ति का उपयोग मनुष्य की भलाई के लिए भी हो सकता है और मनुष्यता के विनाश के लिए भी। दूसरे विश्वमहायुध्द में भीषण प्रलय शक्ति रखनेवाले अणु बमों का प्रयोग जापान के हिरोशिमा और नागसाकी पर किया गया। एक बम ने 40 — 50 हज़ार नगरवासियों को एक क्षण में भस्मीभूत कर दिया। युध्दानन्तर भी विश्व के अनेक राष्ट्र अणुशक्ति के परीक्षणों में लगे हुए हैं। कहते हैं कि विश्व की भलाई के लिए ही आगे अणु शक्ति का प्रयोग किया जाएगा। लेकिन अगर एक और बार इस का विनाशकारी रूप सामने आये तो विश्व का सर्वनाश ही परिणाम होगा।

अच्छे कार्यों के लिए अणु शक्ति का उपयोग करें तो विश्व को बडा फायदा होगा। इस के सहारे चिकित्सा और कृषि के क्षेत्र में हम असाधारण उन्नति कर सकेंगे। वैज्ञानिकों का कहना है कि अनेक रोगों को इसकी शक्ति से दूर कर सकते हैं। कृषि और व्यवसाय के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने में भी अणुशक्ति समर्थ है। कारखानों के लिए इससे अनन्त शक्ति प्राप्त की जा सकती है। अणु शक्ति से बिजली पैदा करके बडे बडे यंत्रों को चलाने में भी आज कई देश सफल हुए हैं। भारत भी अणु शक्ति का प्रयोग करने लगा है। यहाँ इसके लिए अनेक परीक्षण शालाएँ खुल गयी हैं।

वास्तव में परमाणु शक्ति मानवता के इतिहास के एक नवीन युग का सूचक है। यदि इसका सदुपयोग करें तो मनुष्य जाति का भविष्य उज्वल बन जाएगा। हम आशा कर सकते हैं कि आगे दुनिया विनाश के लिए इस का उपयोग नहीं करेगी। क्यों कि एक बार इसका भीषण रूप उसने देखा है।

# देश - प्रेम

Vijayalakshmi M. — II P. D. C.

जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढकर है। जिस देश में हम जन्म लेते हैं और जहाँ पल कर बडे होते हैं उसके प्रति प्रेम होना स्वाभाविक है। जिस प्रकार मनुष्य को अपने माता, पिता, भाई, बहन, स्त्री, पुत्र आदि से प्रेम होता है उसी प्रकार अपने पडोसियों से भी प्रेम होता है; और जब यही प्रेम अधिक विकसित हो जाता है तो मनुष्य अपने सभी देश-वासियों को भाई या मित्र समझ लेता है और उनसे प्रेम करता है। यही देश-प्रेम है।

देश-भक्ति मन की एक उच्च भावना है। यह हमको देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए प्रेरित करती है। सच्चे देश भक्त की दृष्टि में देश की सेवा करना सबसे बडा कर्तव्य होता है।

हमारी उन्नति या अवनति हमारे देश की अवस्था पर निर्भर है। जो लोग संपन्न देशों में जन्म लेते हैं वे अधिक अच्छी शिक्षा पाते हैं और अधिक सुखी जीवन बिता सकते हैं। जो देश अविकसित और निर्धन रहता है वहाँ का जन-जीवन दुखपूर्ण और अभाव ग्रस्त रहता है। यदि हमारा देश संपन्न और समृद्ध नहीं हो तो हम संसार के सामने गौरव के साथ सिर ऊँचा कर नहीं खडे हो सकते।

अपनी जन्म भूमी की रक्षा करना हर मनुष्य का कर्तव्य है। अनेक लोगों ने अपने देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए हँसते हँसते प्राण अर्पित किये हैं। ऐसे देश भक्त वीर सभी देशों में सभी कालों में होते रहे हैं। भारत भूमी में देशभक्तों की परंपरा बडी उज्वल रही है। अंग्रेज़ों के राज्यकाल में लाखों वीरों ने इस देश को स्वाधीन करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। अंत में देश स्वाधीन हुआ।

देश भक्त का कार्य केवल विदेशी शासन या आक्रमण के विरुद्ध लडना ही नहीं है, अपितु देश की बुरी अवस्था सुधारने के लिए निरक्षरता, गरीबी और सामाजिक विषमता के विरुद्ध लडना भी है। सभी देशों में सदा कुछ न कुछ अभाव होते हैं जिन्हें दूर करने के लिए यत्न करना हर देश प्रेमी का धर्म होता है।

सच्चे देश भक्त को देश के लिए आत्मार्पण करने को तैयार रहना चाहिए। उसको अपनी व्यक्तिगत हानि और लाभ की परवाह न करते हुए देश के हित के लिए अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर प्रयत्न करना पडता है। सभी देशों में सच्चे देश-भक्तों की पूजा होती है। देश-भक्ति के नाम पर स्वार्थलाभ के लिए काम करने वाले भी होते हैं जिनका लोग उस समय तक आदर करते हैं जब तक उनके हाथ में सत्ता रहती है। किन्तु सच्चे देशभक्तों का आदर हमेशा होता है और देश के इतिहास में उनको अनश्वर स्थान प्राप्त हो जाता है।

# मैं अब क्या करूँ

Alimohamed Thayyil — III B. Sc. Botany

जो वादा किया वो
निभाना पडेगा . . . . .

भीड को चीर कर यह मधुर आवाज़ वातावरण को मुखर कर रही थी। मैं ने उस ओर बडे चाव से देखा। सडक के बाजू में कुछ लोग इकट्ठे हुए थे। भीड के बीच में एक खूबसूरत लडकी खडी गा रही थी। वह करीब चौदह या पन्द्रह साल की थी। उसके पास एक छोटा लडका भी था जो ताल बजा रहा था।

कुछ देर के लिए मैं उस गान-निर्झर में बह गया। गाना खतम हुआ तो मैं ने अपने को भीड के बीच में ही पाया। लडका एक छोटा पात्र लेकर पैसा माँगने लगा तो लोग वहाँ से जाने लगे। कुछ सज्जनों ने लडके को पैसे दिये। मैं ने भी उसको पाँच पैसा दिया।

उस दिन आधी रात तक मुझे नींद नहीं आयी। उस खूबसूरत लडकी का रूप मेरे मन में अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा था। उसकी मधुर वाणी मेरी आत्मा में अमृतवर्षा कर रही थी। अधिक देर तक मैं ने उसके बारे में सोचा। यदि किसी बेड घर में उस का जन्म हुआ होता तो आज वह कौन बन सकती थी। लेकिन विधि ने उसको ऐसी जगह जन्म दिया जहाँ कलाचातुर्य और खूबसूरती अनुग्रह नहीं; प्रत्युत अभिशाप है।

दिन बीतते गये। एक दिन बडे सबेरे मैं किसी ज़रूरी काम पर शहर की एक गली से चल रहा था। अचानक एक मोड पर कुछ लोगों को इकट्ठे होते देखा। वहों से किसी लडके का ज़ोर ज़ोर से रोना भी सुनाई पडता था। मैं ने उस ओर जाकर देखा तो लडका वही है जो उस दिन उस लडकी के साथ था। उसकी यह दशा देख कर मुझे बडा आश्चर्य हुआ। वह सब से याचना कर हा था—"मेरी बहन को बचाइये, उनसे बचाइये"..... फिर भी रोने के कारण उसकी बातें व्यक्त नहीं हो रही थीं। "बात क्या है?" मैं ने जल्दी ही लोगों को हटाकर उसके पास पहुँचकर पूछा।

उस हताश लडके की आँखों में पल भर के लिए आशा झलक उठी। वह मेरी आँखों में आँखें डालकर कहने लगा —"साहब, मेरी बहन को बचा दीजिए, उसे वे मार डालेंगे; फिर मैं ज़िन्दा नहीं रहूँगा, उसे बचा दीजिए साहब। कल रात को हम दोनों यहीं सडक के किनारे सो रहे थे। आधी रात हुई होगी की चार पाँच लोग कहीं से आये और मेरी बहन को उठाकर ले जाने लगे। बहन का रोना सुनकर मैं जाग उठा तो उनमें से किसी ने मेरी छाती पर ज़ोर से मारा। मैं बेहोश हो यहीं गिर पडा। होश आया तो देखा कि बहन नहीं है। मेरी बहन, वह कहाँ होगी साहब? क्या आप उसे बचा सकते हैं? नहीं.... नहीं तो मैं मर जाऊँगा। मेरा अब इस संसार में कोई नहीं है। वे मेरी बहन को मार डालेंगे।" वह बडी आवाज़ में रो रहा था। सब की ओर देख कर ज़ोर से कह रहा था —"मुझे भी मार डालिए, मैं अब क्या करूँ"।

मुझे ऐसा लगा कि मेरे पैरों के नीचे से धरती फिसल रही है। मैं स्वयं पूछने लगा —"मैं अब क्या करूँ।"

# पल दो पल का जीवन

T. P. Nazar, I P. D. C.

जीवन
पल पल,
अंबर द्रुम दल
चल चल चंचल
नव गतिशील।

जीवन सरिता
लहर लहर,
आलिंगन कर सुख दुख तीर
बहती है वह
नित गतिशील।

पल
दो पल को
सोचा तो,
मैं ने मन ही
मन माना
जीना तो कुछ होना है,
दुनिया को गुण होना है।

यों ही
सोच रहा था मैं,
आयी बाढ
मरण की झट
बह गया मैं
सदा को, हाय!

# सहानुभूति

K. P. Ramunni Kutty — I B. Com.

मैं छत पर टहल रहा था। माँ ने कई बार कहा था — "कुमार छत पर मत चढना, तू गिर जाएगा।"

लेकिन आज माँ बाहर कहीं गयी है। थोडी देर टहलने के बाद छत के एक कोने में जा बैठा। कैसी धूप है। सूर्य अपनी सारी गर्मी और तेज दिखा रहा हैं। पहले पानी बरसता था। बरसात के बाद की धूप कितनी भयंकर है।

बरसात के कारण छत पर पैर फिसलते थे। इसलिए ज़्यादा नहीं चल सका। थोडी देर बाद छत से मैं नीचे की ओर सीढियों से उतर रहा था कि पैर फिसल गये और धम्म से नीचे गिर पडा। आवाज़ सुनकर बहन दौडकर आयी और मुझे ज़मीन पर पडे देख कर ज़ोर से रोने लगी। वह पूछ रही थी — "क्या हुआ कुमार, मैं ने कल ही कहा था न कि तुम छत के उपर का यह खेल छोड दो। तुम्हारा यह हाल मैं कैसे देख सकती हूँ।" बहन ने पास आकर मुझे उठाया। तभी मुझे मालुम हुआ कि मेरे दाहिने पैर में एक चोट लगी है। उसे छिपाने के यत्न में मैं जल्दी जल्दी चलने लगा और कहता रहा — "नहीं, कुछ नहीं हैं, पैर थोडा फिसल गया।" फिर भी बहन मेरी हालत पर दुखी होती रही।

माँ घर पर होतीं तो हालत निराली होती। वे ईश्वर के नाम ले कर प्रार्थना करतीं कि मेरे बेटे को बचा दे। और भी कई देवताओं के नाम लेती रहतीं। अच्छा हुआ कि वे बाहर कहीं गयी थीं।

लेकिन पडोसियों की आँखों से मैं बच नहीं सका। ऐसा लगा की मेरे पैर में चोट लगने से दर्द उनको हो रही है। उनकी झूठी सहानुभूति देख कर मुझे ज़्यादा दर्द होने लगी।

थोडी देर बाद एक मित्र के साथ मैं अस्पताल की ओर निकला। चोट इतनी गहरी थी कि मैं ठीक चल नहीं सकता था। सडक पर जानने वाले सभी लोग हम को रोक कर मुझ से हाल पूछते रहे और सहानुभूति प्रकट करते रहे

मैं सब की आँखों से बचकर जाना चाह रहा था कि हमारे क्लास के गोपाल को दूर से आते देखा। मुझे लडखडाते देखकर वह हँस रहा था। पास आकर उसने सब बातें जान लीं। फिर वह उपदेश देने लगा — "तुम हमेशा ऐसे काम करते हो। बिलकुल 'केरलस'। छत पर चढने के पहले तुमको ज़रा सोचना चाहिए था।" मैं कुछ न बोला। जल्दी वहाँ से आगे बढा।

एक फरलांग हम और गये होंगे कि हमारे अध्यापक कृष्णस्वामी रास्ते में मिले। उनके उपदेशों को पाकर थोडा और गये होंगे कि सडक के पासके एक घर से एक बूढे ने मेरे पास पहुँचकर करुणा भरे स्वर में पूछा — "अरे बेटे, क्या पैर में अब भी दर्द होती है? हे ईश्वर, चोट उतनी गहरी है? खून बहुत निकला था? धीरे धीरे बडी सावधानी से चलना।"

मैं ने कुछ नहीं कहा। मेरी बातों की वे प्रतीक्षा भी नहीं करते थे।

सडक के किनारों की दूकानों में बैठने वाले वहीं बैठे बैठे हाल पूछते थे। मैं बिलकुल ऊब गया और चुपचाप मित्र के साथ चला जा रहा था। मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार ईश्वर से प्रार्थना की — हे भगवान, इन शुभ चिन्तकों से मुझे बचा दे, नहीं तो मेरा कलेजा फट जाएगा। मैं यह सह नहीं सकता।

# यादें

Najumunnessa V. — II P. D. C.

राजेष, बेटे राजेष, कहाँ गया है वह? शायद अपने कमरे में सोता होगा। देखती हूँ। ..... यहाँ भी नहीं है। उसकी मेज़ पर एक फोटो..... उसका अपना फोटो होगा। चश्मा होता तो अच्छी तरह देख सकती थी। आजकल आँखें ठीक नहीं हैं। बूढी होने लगी है न। यह राजेष का फोटो नहीं है। यह किसी लडकी का फोटो है। यह लडकी है कौन? कितनी सुन्दर लडकी। मैं ने इसे कहीं देखा है। लेकिन याद नहीं आती। स्पष्ट रूप से फोटो देख भी नहीं सकती।

लेकिन राजेष की मेज़ पर यह कैसे आया? उसने अब से यह सब शुरु किया? इस के लिए वह कोलेज जाता है? उसको ज़िन्दगी के बारे में क्या मालुम!

मुझे भी उन दिनों कुछ नहीं मालुम था। मैं ने भी जीवन के बारे में कितने सपने देखे थे। वे दिन, वे सपने सब .....

मेरा परिवार कितना गरीब था। भाई के छोटे वेतन पर एक परिवार को गुजरना था। जब मैं मेट्रिकुलेशन की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुई तो मेरे भाई की खुशी की सीमा न रही। उनहोंने कहा — "तुझे मैं पढाऊँगा। यदि मर न जाऊँ, तो ज़रूर पढाऊँगा।"

कोलेज में और होस्टल में मुझे आसानी से प्रवेश मिला। मैं खूब पढने लगी। क्लास के अन्य बिद्यार्थी कहा करते थे — "राधा परीक्षा में प्रथम आयेगी।" लेकिन जीवन की परीक्षा में मैं हार गयी। एक दिन हमारे क्लास का जयराज मेरे पीछे पीछे आने लगा। मैं क्लास से होस्टल की ओर जा रही थी। अकेली थी। मेरे समीप आकर जयराज ने कहा — "राधे, ज़रा सुनो तो। बुरा न मानो, मैं तुम को बहुत चाहता हूँ।"

मैं कुछ न बोल सकी। डर गयी थी। बहुत जलदी चलकर होस्टल पहूँच गयी।

उसके बाद कई बार जयराज ने मुझसे बोलने की कोशिश की। लेकिन मैं कुछ नहीं बोली।

एक दिन एकान्त में जयराज मेरे समीप आया और कहने लगा — "सुनो राधे, मैं जानता हूँ कि तुम मुझे पसंद नहीं करती। लेकिन मैं तुम्हारे लिए मरने को भी तैयार हूँ। इस जिन्दगी में किसी दूसरी लडकी से शादी नहीं करूँगा। मैं ने अपने मन से तुमको वरण किया है। तुम कहो तो, मैं तुम्हारे घरवालों से मिल कर सब ठीक कर सकता हूँ।"

तब मैं ने कहा — मैं क्या कह सकती हूँ। घरवाले जो कहेंगे करूँगी।

जयराज ने कहा — तब ठीक है। पढाई खतम होने के बाद मैं तुम्हारे घरवालों से बातचीत करूँगा। अब मेरे अमीर पिताजी एक गरीब लडकी से शादी करने नहीं देंगे। पढाई के बाद जब मैं आत्मनिर्भर हो जाऊँगा तो मुझे कोई नहीं रोक सकेगा। इसलिए तब तक तुम को मेरी प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि तुम मुझे छोड दोगी तो मेरा जीवन बरबाद हो जाएगा। थोडी देर सोचने के बाद मैं ने कहा — मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी। तुम्हारा जीवन बरबाद होने नहीं दूँगी। मैं एक गरीब लडकी हूँ। मुझे तुम भूलना मत।

दिन बीतने लगे। हमारा जीवन स्वप्नों के पंख फैलाकर कल्पना की सौंदर्य भूमि पर विहार करने लगा। लेकिन वे आनन्द के दिन स्थाई नहीं थे। मेरे जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिससे मैं कल्पनाओं के आकाश से याथार्थ्य की कठोर धरती पर गिर पडी।

मेरे भाई बीमार हो गये और कई दिन तक अस्पताल में पडे रहे। डाक्टरों ने कहा कि एक दो साल के लिए विश्राम लेना चाहिए। फलत : घर की हालत बिगड गयी। मेरी पढाई खतम हुई। दरिद्रता का भीषण रूप मैं ने निकट से देखा और अनुभव किया। जयराज की प्रतीक्षा में दिन, हफ्ते, महिने और साल बीत गये। पडोस की एक लडकी ने कहा कि जयराज अच्छी तरह पढ रहा है और परीक्षाएँ पास करता जा रहा है। सुन कर मुझे बडी खुशी हुई। मेरे जयराज जलदी मुझसे शादी करने आयेंगे।

एक दिन जयराज का एक पत्र मिला जिस में लिखा था — राधा, क्षमा करना। पिता की आज्ञा के अनुसार मैं ने एक अमीर घर की लडकी से शादी करने का निश्चय किया....

आगे मैं कुछ नहीं पढ सकी। बेहोश हो गयी थी।

और भी कई दिन हुए। मैं ने सब सह लिया। दुख के अनेक रूप मैं ने देखे। आखिर दुबले पतले बीमार भाई के आग्रह से एक अच्छे मनुष्य से मेरी शादी भी हुई। लेकिन मुझे ज़्यादा धन और एक अच्छे बेटे को देकर वे इस संसार से चल बसे।

* * * * *

माँ, तुम क्या सोच रही हो? राजेष की आवाज़ सुनकर मैं ने मुडकर देखा। मेरे हाथ में फोटो देखकर वह कहने लगा।

माँ, यह फोटो हमारे प्रो. जयराज की एक किताब से मुझे मिला है। कल मैं उनके घर गया तो उनके पुस्तकालय से एक किताब ले आया। कल रात को वह किताब पढ रहा था कि उससे यह फोटो नीचे गिरा। कितना सुन्दर रूप है माँ; यदि मेरी कोई बहन होती तो इसकी जैसी रहती।

प्रो. जयराज का नाम सुनकर मेरा दिल तेजी से चलने लगा। बडे ध्यान से मैं ने फोटो देखा। हाँ, यह मेरा ही फोटो है। धीरे धीरे मेरी आँखों में अंधेरा छाने लगा।